हिमाचल प्रदेश केंद्रीय वश्व वद्यालय

मान वकी एवं भाषा संकाय

हिन्दी एवं भारतीय भाषा वभाग

सेमेस्टर-1, प्रश्नपत्र - 4

पाठ्यक्रम कूट-संकेत: एच.आई.एल. 510 (**HIL** 510)

पाठ्यक्रम शीर्षक- आदिकालीन साहित्य श्रेय तुल्यमान: 4 श्रेय (1 श्रेय व्याख्यान,संगठित कक्षा गति व ध और व्यक्तिगत संपर्क के 10 घंटे; प्रयोगशाला या / व्यावहारिक कार्य,ट्यूटोरियल, शक्षक नियंत्रित गति व धयों /कार्य के 5 घंटे;और अन्य कार्य जैसे स्वतन्त्र व्यक्तिपरक कार्य ,सामूहिक कार्य,निर्धारित अनिवार्य /वैकल्पिक कार्य,साहित्य समीक्षा,पुस्तकालय कार्य,तथ्य संग्रह,शोधपत्र लेखन,से मनार,प्रबंध लेखन,इत्यादि के 15 घंटे के समान है |

पाठ्यक्रम का उद्देश्य: पाठ्यक्रम का लक्ष्य वद्या र्थयों को हिन्दी साहित्य के उद्भव से परि चत कराना है | हिन्दी साहित्य की शुरुआत के समय मौजूद व भन्न चन्ताधाराओं के वषय में जानकारी प्रदान करना है, जिससे क साहित्यिक समझ को वक सत कया जा सके | यही नहीं हिन्दी साहित्य के उद्गम और उसकी गौरवशाली परम्परा के दाय से एम.ए.(हिन्दी) के वद्या र्थयों को परि चत कराया जा सके |

उपस्थिति अनिवार्यता: पूर्ण एवं सुनिश्चित लाभ हेतु वद्यार्थी का सभी कक्षाओं में भागीदार होना अनिवार्य है | न्यूनतम 75% कक्षाओं में उपस्थिति दर्ज ना होने पर वद्यार्थी को परीक्षा में बैठने से वं चत कया जा सकता है |

मूल्यांकन मापदंड : क) मध्याव ध परीक्षा - 25%

ख) सत्रांत परीक्षा - 50%

ग) सतत आतंरिक मूल्यांकन - 25%

*पुस्तकालय कार्य - 5%

*प्रायो गक कार्य - 5%

*गृह-कार्य - 5%

* कक्षा परीक्षा - 5%

*कक्षा-प्रस्तुतियां 5%

हिमाचल प्रदेश केंद्रीय वश्व वद्यालय

मान वकी एवं भाषा संकाय

हिन्दी एवं भारतीय भाषा वभाग

सेमेस्टर-1, प्रश्नपत्र - 4

पाठ्यक्रम कूट-संकेत: एच.आई.एल. 510 (**HIL** 510)

पाठ्यक्रम शीर्षक- आदिकालीन साहित्य श्रेय तुल्यमान: 4 श्रेय

पाठ्यक्रम वषयवस्तु –

इकाई-1 हिन्दी साहित्य का आदिकाल : पृष्ठभू म एवं परिस्थितियाँ (6 घंटे)

क) हिन्दी साहित्य का आदिकाल : एक परिचय

ख) आदिकाल के नामकरण की समस्या

ग) आदिकालीन परिस्थितियाँ : सामाजिक,राजनैतिक, आ र्थक,सांस्कृतिक

इकाई-2 सद्ध एवं नाथ साहित्य (6 घंटे)

क) सद्ध साहित्य : प्रमुख प्रवृत्तियाँ

ख) सद्ध साहित्य : प्रमुख क व, साधना पद्धति, साहित्यिक योगदान

ग) नाथ साहित्य : प्रमुख प्रवृत्तियाँ

घ) नाथ साहित्य : प्रमुख क व,साधना पद्धति,साहित्यिक योगदान

इकाई-3 जैन साहित्य (3 घंटे)

क) जैन साहित्य : प्रमुख प्रवृत्तियाँ

ख) जैन साहित्य : चरित काव्य एवं राम काव्य

इकाई-4 रासो काव्य परम्परा (11 घंटे)

क) रासो काव्य : प्रमुख प्रवृत्तियाँ, रासो काव्य परम्परा, प्रमुख रासो काव्य एवं क व

ख) पृथ्वीराज रासो : प्रामा णकता का प्रश्न एवं काव्य-सौष्ठव

ग) पाठ ववेचन : चंद वरदाई – पृथ्वीराज रासउ (शा शवृता ववाह प्रस्ताव)

इकाई-5 लौ कक साहित्य एवं श्रृंगार काव्य परम्परा (14 घंटे)

क) लौ कक साहित्य एवं श्रृंगार काव्य : प्रमुख प्रवृत्तियाँ

ख) अमीर खुसरो – अमीर खुसरो :व्यक्तित्व एवं कृतित्व

ग) पाठ ववेचन : (सन्दर्भ ग्रन्थ : भोलानाथ तिवारी, 'अमीर खुसरो और उनका हिन्दी साहित्य, पहे लयाँ : संख्या 2,3,27, बहिला र्लका : संख्या 9,13,28,30,31,37,गीत : संख्या 1,2,5,7, कव्वाली : संख्या 1,2)

घ) वद्यापति : कृतित्व,प्रकृति वर्णन,भक्ति एवं श्रृंगार,अपरूप के क व

ङ) पाठ ववेचन : (सन्दर्भ ग्रन्थ : सं रामवृक्ष बेनीपुरी, 'वद्यापति पदावली',वंदना :पद संख्या : 1,2, वयः सं ध :पद संख्या 4,9,12,13,14,वसंत : पद संख्या 174,179,181,184)

संभा वत ग्रन्थ –

आधार ग्रन्थ :

1. चंद वरदाई – पृथ्वीराज रासउ (पद्मावती समय) अशोक प्रकाशन, नई सड़क,दिल्ली-6
2. अमीर खुसरो – अमीर खुसरो और उनका हिन्दी साहित्य (संकलन भोलानाथ तिवारी) प्रभात प्रकाशन, नई दिल्ली -110002
3. वद्यापति - वद्यापति पदावली (सं रामवृक्ष बेनीपुरी),लोक भारती प्रकाशन,इलाहाबाद-1
4. अब्दुल रहमान - सन्देश रासक (सम्पादन - आचार्य हजारी प्रसाद द्ववेदी एवं वश्वनाथ त्रिपाठी) राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली - 110 002

सन्दर्भ ग्रन्थ :

5. आचार्य रामचंद्र शुक्ल हिन्दी साहित्य का इतिहास,काशी नागरी प्रचारिणी सभा काशी,1969

6. बच्चन संह हिन्दी साहित्य का दूसरा इतिहास,राधाकृष्ण प्रकाशन,1996

7. हजारी प्रसाद Ì²uÉåSÏ हिन्दी साहित्य का आदिकाल ,पटना,1961

8. ब्रजरत्नदास (सम्पादन) खुसरो की हिन्दी क वता, नागरी प्रचारिणी सभा,वाराणसी

9.. ÌuÉ±ÉmÉÌiÉ डॉ. शवप्रसाद संह,लोक भारती प्रकाशन,इलाहाबाद,1976

10. हजारी प्रसाद Ì²uÉåSÏ,नामवर संह (सम्पादन) सं क्षप्त पृथ्वीराज रासो, साहित्य भवन प्रा. ल. इलाहाबाद

11. डॉ. वासुदेव संह (सम्पादन) आदिकालीन काव्य, वश्व वद्यालय प्रकाशन,वाराणसी

हिमाचल प्रदेश केन्द्रीय वश्व वद्यालय

मान वकी और भाषा संकाय

हिन्दी एवं भारतीय भाषा वभाग

एम.ए. [हिन्दी] सेमेस्टर- 3

पाठ्यक्रम कूट-संकेत : एच.आई.एल. 406 [HIL406]

पाठ्यक्रम शीर्षक : खड़ी बोली का काव्य: हिन्दी की लम्बी क वताएँ

क्रे डट : 02[एक क्रे डट व्याख्यान, संगठित कक्षा गति व ध और व्यक्तिगत सम्पर्क के 10 घंटे के बराबर, प्रयोगशाला /व्यावहारिक कार्य /ट्युटोरियल / शक्षक नियंत्रित गति व धयाँ के 5 घंटे और अन्य कार्य जैसे स्वतन्त्र व्यक्तिपरक कार्य, सामूहिक कार्य, निर्धारित अनिवार्य /वैकल्पिक कार्य, साहित्य समीक्षा, पुस्तकालय कार्य, तथ्य संग्रह, शोध-पत्र लेखन, सेमीनार, प्रबंध लेखन इत्यादि के 15 घंटे के सामान हैं]

पाठ्यक्रम उद्देश्य : पाठ्यक्रम का लक्ष्य छात्रों को हिन्दी की लम्बी क वताओं के सौंदर्यशास्त्र से परि चत कराते हुए, उनकी गहन और तीक्ष्ण संवेदना के मर्म तक पहुँचाना है ता क वे समकालीन जीवन-यथार्थ का मूल्यांकन- वश्लेषण ववेकपूर्ण और वस्तुनिष्ठ ढंग से कर सकें | इन लम्बी क वताओं का महत्त्व प्रतियोगी परीक्षाओं की दृष्टि से भी अ धक है |

उपस्थिति अनिवार्यता : पूर्ण एवं सुनिश्चित लाभ हेतु छात्र का सभी कक्षाओं में उपस्थित होना अनिवार्य है | न्यूनतम 75% कक्षाओं में उपस्थिति दर्ज न होने पर छात्र को परीक्षा में बैठने से वं चत कया जासकता है |

मूल्यांकन मापदंड : क.] मध्याव ध-सत्र परीक्षा - 25%

ख.] सत्रांत परीक्षा - 50%

ग.] सतत आतंरिक मूल्यांकन - 25%

- पुस्तकालय कार्य - 5%
- गृह कार्य - 5%
- कक्षा परीक्षा - **10%**
- कक्षा प्रस्तुतियां - 5%

हिन्दी एवं भारतीय भाषा वभाग

एम.ए. [हिन्दी] सेमेस्टर- 3

पाठ्यक्रम शीर्षक : *खड़ी बोली का काव्य:हिन्दी की लम्बी क वतायेँ*

पाठ्यक्रम कोड - **HIL 40**6 क्रे डट- **2**

<u>पाठ्यक्रम ववरण -</u>

इकाई -1 हिन्दी की लम्बी क वताओं का स्वरूप और वकास

- लम्बी क वताओं का स्वरूप और रचना- वधान
- लम्बी क वताओं का महत्त्व

इकाई -2 निराला

- राम की शक्तिपूजा
- निराला की काव्य-चेतना

इकाई- 3 नागार्जुन और अज्ञेय

- हरिजनगाथा
- नागार्जुन की काव्य-चेतना
- असाध्य वीणा
- अज्ञेय की काव्य-चेतना

इकाई -4 धू मल

- पटकथा
- धू मल की काव्य-चेतना

इकाई - 5 मुक्तिबोध

- अँधेरे में
- मुक्तिबोध की काव्य-चेतना

आधार ग्रन्थ -

1. अना मका - सूर्यकांत त्रिपाठी निराला
2. चाँद का मुंह टेढ़ा है - गजानन माधव मुक्तिबोध
3. आँगन के पार द्वार - सच्चिदानंद हीरानंद वात्स्यायन अज्ञेय
4. संसद से सड़क तक - सुदामा पांडे धू मल
5. प्रतिनि ध क वतायें - सं.नामवर संह

सन्दर्भ ग्रन्थ :

6. मुक्तिबोध: ज्ञान और संवेदना - नंद कशोर नवल, राजकमल प्रकाशन , दिल्ली
7. नयी क वता और अस्तित्ववाद - राम वलास शर्मा , राजकमल प्रकाशन , दिल्ली
8. अज्ञेय और आधुनिक रचना की समस्या - रामस्वरूप चतुर्वेदी
9. समकालीन क वता का यथार्थ - परमानन्द श्रीवास्तव , हरियाणा ग्रन्थ अकादमी
10. निराला की साहित्य साधना - राम वलास शर्मा , राजकमल प्रकाशन , नई दिल्ली
11. क्रन्तिकारी क व निराला - बच्चन संह
12. अज्ञेय और आधुनिक रचना की समस्या - रामस्वरूप चतुर्वेदी
13. नागार्जुन का काव्य - अजय तिवारी
14. क वता यात्रा - रामस्वरूप चतुर्वेदी

हिमाचल प्रदेश केन्द्रीय वश्व वद्यालय

Central University of Himachal Pradesh

मान वकी और भाषा संकाय

हिन्दी एवं भारतीय भाषा वभाग

एम.ए. [हिन्दी] सेमेस्टर- 1

पाठ्यक्रम कूट-संकेत : एच.आई.एल. 408 [**HIL408**]

पाठ्यक्रम शीर्षक : हिन्दी की उत्पत्ति, वकास और बो लयाँ:पुरानी हिन्दी, दकनी, भाषा परिचय

क्रे डट : 04 [एक क्रे डट व्याख्यान, संगठित कक्षा गति व ध और व्यक्तिगत सम्पर्क के 10 घंटे के बराबर, प्रयोगशाला/व्यावहारिक कार्य/ट्युटोरियल/शक्षक नियंत्रित गति व धयाँ के 5 घंटे और अन्य कार्य जैसे स्वतन्त्र व्यक्तिपरक कार्य, सामूहिक कार्य, निर्धारित अनिवार्य/ वैकल्पिक कार्य, साहित्य समीक्षा, पुस्तकालय कार्य, तथ्य संग्रह, शोध-पत्र लेखन, सेमीनार, प्रबंध लेखन इत्यादि के 15 घंटे के सामान हैं]

पाठ्यक्रमउद्देश्य : पाठ्यक्रम का लक्ष्य छात्रों को भाषा के महत्त्व और उपयो गता के साथ हिन्दी भाषा की वशेष स्थिति तथा उसकी सांस्कृतिक-चेतना से परि चत कराना है | हिन्दी के क्षेत्र, वस्तार तथा संभावनाओं का अध्ययन करते हुए उसकी सीमाओं का मूल्यांकन करना भी पाठ्यक्रम का उद्देश्य है, जिससे छात्रों में एक वशेष भाषा-परंपरा के वश्लेषण की क्षमता वक सत होसके |

उपस्थितिअनिवार्यता : पूर्ण एवं सुनिश्चित लाभ हेतु छात्र का सभी कक्षाओं में उपस्थित होना अनिवार्य है |न्यूनतम 75% कक्षाओं में उपस्थिति दर्ज न होने पर छात्र को परीक्षा में बैठने से वं चत कया जासकता है |

मूल्यांकन मापदंड :

क.] मध्याव ध-सत्र परीक्षा - 25%

ख.] सत्रांत परीक्षा - 50%

ग.] सतत आतंरिक मूल्यांकन - 25%

* पुस्तकालय कार्य - 5%
* गृह कार्य - 5%
* कक्षा परीक्षा - **10%**
* कक्षा प्रस्तुतियां - 5%

हिन्दी एवं भारतीय भाषा वभाग

एम.ए.[हिन्दी] , सेमेस्टर-1

पाठ्यक्रम शीर्षक : हिन्दी की उत्पत्ति, वकास और बो लयाँ :पुरानी हिन्दी, दकनी, भाषा परिचय

कोर्स कोड **-HIL 408** क्रे डट - 4

इकाई -1 भाषा: अर्थ, स्वरूप और वशेषताएं

- भाषा- अर्थ, परिभाषा और स्वरूप
- भाषा की वशेषताएँ
- भाषा और बोली में सम्बन्ध

इकाई -2 हिन्दी की ऐतिह सक पृष्ठभू म

- प्राचीन भारतीय आर्य भाषाएँ
- मध्यकालीन भारतीय आर्य भाषाएँ
- आधुनिक भारतीय आर्य भाषाएँ

इकाई-3 हिन्दी की उपभाषाएँ और बो लयाँ

- हिन्दी की प्रमुख बो लयों का परिचय
- काव्य भाषा के रूप में ब्रज और अवधी का वकास
- खड़ी बोली हिन्दी का उद्भव एवं वकास

इकाई-4हिन्दी का अर्थ और वस्तार 8 घंटे

- हिन्दी: अर्थ और स्वरूप
- दकनी हिन्दी तथा उर्दू भाषा का वकास
- हिंदी-उर्दू अन्तःसम्बन्ध

इकाई-5 हिन्दी की संवैधानिक स्थिति

- राजभाषा और राष्ट्र भाषा के रूप में हिन्दी
- हिन्दी का मानक स्वरूप
- देवनागरी ल प, वशेषताएँ तथा मानकीकरण

<u>सन्दर्भ ग्रन्थ :</u>

1. *भाषा और समाज : राम वलास शर्मा*
2. *भारतीय आर्य भाषा और हिन्दी : सुनीति कुमार चटर्जी*
3. *हिन्दी भाषा का इतिहास : धीरेन्द्र वर्मा*
4. *हिन्दी भाषा का उद्भव और वकास :उदय नारायण तिवारी*
5. *हिन्दी भाषा का सं क्षप्त इतिहास : भोलानाथ तिवारी*
6. *भारत के प्राचीन भाषा परिवार और हिन्दी : राम वलास शर्मा*
7. *भारतेंदु युग और हिन्दी भाषा की वकास परंपरा : राम वलास शर्मा*
8. *हिन्दी साहित्य और संवेदना का वकास : रामस्वरूप चतुर्वेदी*
9. *हिन्दी भाषा संरचना के व वध आयाम : रवीन्द्रनाथ श्रीवास्तव*
10. *हिन्दी भाषा : हरदेव बाहरी*
11. *भाषा वज्ञान : भोलानाथ तिवारी*
12. *आधुनिक भाषा वज्ञान : राजम ण शर्मा*
13. *उर्दू का आरं भक युग : शम्सुर्रहमान फ़ारूकी*
14. *उर्दू भाषा और साहित्य : रघुपति सहाय ‘ फराक़’ गोरखपुरी*
15. *हिंदी,उर्दू और हिन्दुस्तानी : पद्म संह शर्मा*
16. *दक्खिनी हिंदी : बाबुराम सक्सेना*

हिमाचल प्रदेश केंद्रीय वश्व वद्यालय

मान वकी एवं भाषा संकाय

हिन्दी एवं भारतीय भाषा वभाग

सेमेस्टर-1,प्रश्नपत्र -3

पाठ्यक्रम कूट-संकेत: एच.आई.एल. 410 (**HIL** 410)

पाठ्यक्रम शीर्षक- कहानी श्रेय तुल्यमान: 4 श्रेय (1 श्रेय व्याख्यान,संगठित कक्षा गति व ध और व्यक्तिगत संपर्क के 10 घंटे; प्रयोगशाला या /व्यावहारिक कार्य,ट्यूटोरियल, शक्षक नियंत्रित गति व धयों /कार्य के 5 घंटे;और अन्य कार्य जैसे स्वतन्त्र व्यक्तिपरक कार्य ,सामूहिक कार्य,निर्धारित अनिवार्य /वैकल्पिक कार्य,साहित्य समीक्षा,पुस्तकालय कार्य,तथ्य संग्रह,शोधपत्र लेखन,से मनार,प्रबंध लेखन,इत्यादि के 15 घंटे के समान है |

पाठ्यक्रम का उद्देश्य: पाठ्यक्रम का लक्ष्य वद्या र्थयों को कहानी वधा से अवगत करना है | हिन्दी साहित्य की कहानी वधा, वधा के तौर पर कब प्रकाश में आई ? उसकी सशक्त परम्परा का निर्माण कब और कन साहित्यिक व्यक्तियों के द्वारा हुआ? आज के समकालीन दौर में हिन्दी कहानी कस तरह जन्मूल्यों को उठाती है? उसकी रचना-प्र क्रया और उसका नयापन क्या है ? इन तमाम जिज्ञासाओं के आलोक में एम.ए.(हिन्दी) के वद्या र्थयों के भीतर गंभीर साहित्यिक ववेक पैदा करना है,जिससे क उनके भीतर रचनात्मक ववेक पैदा कया जा सके |

उपस्थिति अनिवार्यता: पूर्ण एवं सुनिश्चित लाभ हेतु वद्यार्थी का सभी कक्षाओं में भागीदार होना अनिवार्य है | न्यूनतम 75% कक्षाओं में उपस्थिति दर्ज ना होने पर वद्यार्थी को परीक्षा में बैठने से वं चत कया जा सकता है |

मूल्यांकन मापदंड : क) मध्याव ध परीक्षा - 25%

ख) सत्रांत परीक्षा - 50%

ग) सतत आतंरिक मूल्यांकन - 25%

*पुस्तकालय कार्य - 5%

*प्रायो गक कार्य - 5%

*गृह-कार्य - 5%

* कक्षा परीक्षा - 5%

*कक्षा-प्रस्तुतियां 5%

हिमाचल प्रदेश केंद्रीय वश्व वद्यालय

मान वकी एवं भाषा संकाय

हिन्दी एवं भारतीय भाषा वभाग

सेमेस्टर-1,प्रश्नपत्र -3

पाठ्यक्रम कूट-संकेत: एच.आई.एल. 410 (**HIL** 410)

पाठ्यक्रम शीर्षक- कहानी श्रेय तुल्यमान: 4 श्रेय

इकाई-1 हिन्दी कहानी का उद्भव और वकास (8 घंटे)

क) कहानी: अर्थ एवं स्वरूप

ख) संस्कृत कथा साहित्य का वकास

ग) हिन्दी की पहली कहानी : मनन एवं मंथन

घ) हिन्दी कहानी का उद्भव और वकास

ङ) एक टोकरी भर म ी कहानी : समीक्षा एवं पाठ वश्लेषण

च) ग्यारह वर्ष का समय कहानी : समीक्षा एवं पाठ वश्लेषण

इकाई-2 प्रेमचंद पूर्व हिन्दी कहानी (8 घंटे)

क) प्रेमचंद पूर्व हिन्दी कहानियाँ : प्रमुख प्रवृत्तियाँ

ख) प्रेमचंद पूर्व कहानियों का वकास

ग) पाठ ववेचन एवं समीक्षा : चंद्रधर शर्मा गुलेरी की 'उसने कहा था' कहानी

इकाई-3 प्रेमचंद युगीन हिन्दी कहानी (8 घंटे)

क) प्रेमचंद युगीन हिन्दी कहानियाँ : प्रमुख प्रवृत्तियाँ

ख) प्रेमचंद युगीन प्रमुख कहानियाँ एवं उनका वश्लेषण

ग) प्रेमचंद युगीन कहानियों का शल्पगत वकास

घ) पाठ ववेचन एवं समीक्षा : प्रेमचंद की 'कफन' कहानी

ङ) पाठ ववेचन एवं समीक्षा : प्रसाद की 'आकाशदीप' कहानी

इकाई-4 प्रेमचंदोत्तर हिन्दी कहानी (8 घंटे)

क) प्रेमचंदोत्तर हिन्दी कहानियाँ : प्रमुख प्रवृत्तियाँ

ख) प्रेमचंदोत्तर युगीन प्रमुख हिन्दी कहानियाँ एवं उनका वश्लेषण

ग) प्रेमचंदोत्तर युगीन कहानियों का शल्पगत वकास

घ) पाठ ववेचन एवं समीक्षा : यशपाल की ' चत्र का शीर्षक' कहानी

ङ) पाठ ववेचन एवं समीक्षा : अज्ञेय की 'गैंग्रीन' कहानी

च) पाठ ववेचन एवं समीक्षा : रेणु की 'तीसरी कसम'कहानी

इकाई-5 नई कहानी एवं समकालीन कहानी : दशा और दिशा (8 घंटे)

- क) नई कहानी: प्रमुख प्रवृत्तियाँ
- ख) नई कहानी: वषय वस्तु एवं शल्पगत वकास
- ग) पाठ ववेचन एवं समीक्षा : निर्मल वर्मा की 'परिंदे' कहानी
- घ) समकालीन कहानी : प्रमुख प्रवृत्तियाँ
- ङ) समकालीन कहानी :प्रमुख प्रश्न और संभावनाएं
- च) पाठ ववेचन एवं वश्लेषण : ओमप्रकाश वाल्मी क की 'सलाम' कहानी

संभा वत ग्रन्थ -

आधार ग्रन्थ :

1. कृष्ण कुमार (संपादन) प्रेमचंद की श्रेष्ठ कहानियाँ,वाणी प्रकाशन,दिल्ली
2. जयशंकर प्रसाद प्रतिन ध कहानियां, राजकमल प्रकाशन,नई दिल्ली
3. यशपाल भूख के तीन दिन,लोकभारती प्रकाशन,इलाहाबाद
4. गीतांज ल श्री (सम्पादन) अज्ञेय : कहानी संचयन, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली
5. फणीश्वर नाथ रेणु प्रतिनि ध कहानियां,राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली
6. निर्मल वर्मा परिंदे, राजकमल प्रकाशन,नई दिल्ली
7. ओमप्रकाश वाल्मी क सलाम, राधाकृष्ण प्रकाशन, दिल्ली

सन्दर्भ ग्रन्थ :

8. देवीशंकर अवस्थी साहित्य वधाओं की प्रकृति, राधाकृष्ण प्रकाशन,दिल्ली
9. परमानन्द श्रीवास्तव कहानी की रचना-प्र क्रया,लोक भारती प्रकाशन,इलाहाबाद,2012
10. गंगाधरन वी. प्रसाद की कहानियां सामाजिक और सांस्कृतिक अध्ययन, वाणी प्रकाशन,दिल्ली
11. श्रीमती मृदुला प्रसाद अज्ञेय की कहानियों का वस्तु- शल्प, प्रय साहित्य सदन, सोनिया वहार,दिल्ली,2010

12 देवी शंकर अवस्थी नयी कहानी: सन्दर्भ और प्रकृति,राजकमल,दिल्ली,1973

13 डॉ. आलोक राय कथाकार निर्मल वर्मा : दृष्टि और सृष्टि,प्रकाशन संस्थान,नई दिल्ली

154राजेन्द्र यादव कहानी : अनुभव और अ भव्यक्ति,वाणी,दिल्ली

हिमाचल प्रदेश केंद्रीय वश्व वद्यालय

मान वकी एवं भाषा संकाय

हिन्दी एवं भारतीय भाषा वभाग

एम.ए (हिन्दी), सेमेस्टर-3

पाठ्यक्रम शीर्षक - नाटक और रंगमंच : हिन्दी नाटक,नाट्य रूपांतर

पाठ्यक्रम कूट संकेत - एच.आई.एल 417 (HIL 417)   श्रेय तुल्यमान: 4 श्रेय (1 श्रेय व्याख्यान,संगठित कक्षा गति व ध और व्यक्तिगत संपर्क के 10 घंटे; प्रयोगशाला या /व्यावहारिक कार्य,ट्यूटोरियल, शक्षक नियंत्रित गति व धयों /कार्य के 5 घंटे;और अन्य कार्य जैसे स्वतन्त्र व्यक्तिपरक कार्य ,सामूहिक कार्य,निर्धारित अनिवार्य /वैकल्पिक कार्य,साहित्य समीक्षा,पुस्तकालय कार्य,तथ्य संग्रह,शोधपत्र लेखन,से मनार,प्रबंध लेखन,इत्यादि के 15 घंटे के समान है |

पाठ्यक्रम का उद्देश्य: एम.ए स्तर के वद्या र्थयों को भारतीय नाट्य परम्परा से अवगत कराते हुए हिन्दी की नाट्य परम्परा के सूत्रपात से लेकर अद्यतन उसके क्र मक वकास की व धवत जानकारी देना है | वद्या र्थयों को हिन्दी की प्रमुख साहित्यिक नाट्य कृतियों की जानकारी मल सके,इस हेतु कृतियों का सरल वश्लेषण अपे क्षत है । साथ ही रंगमच,नाट्य भाषा एवं नाट्य प्रयोगों के आलोक में हिन्दी नाटकों की प्रवृत्तियों, परिस्थितियों को ववे चत करना है ।

उपस्थिति अनिवार्यता: पूर्ण एवं सुनिश्चित लाभ हेतु वद्यार्थी का सभी कक्षाओं में भागीदार होना अनिवार्य है | न्यूनतम 75% कक्षाओं में उपस्थिति दर्जा ना होने पर वद्यार्थी को परीक्षा में बैठने से वं चत कया जा सकता है |

मूल्यांकन मापदंड : क) मध्याव ध परीक्षा - 25%

ख) सत्रांत परीक्षा - 50%

ग) सतत आतंरिक मूल्यांकन - 25%

*पुस्तकालय कार्य - 5%

*प्रायो गक कार्य - 5%

*गृह-कार्य - 5%

* कक्षा परीक्षा - 5%

*कक्षा-प्रस्तुतियां 5%

हिमाचल प्रदेश केंद्रीय वश्व वद्यालय

मान वकी एवं भाषा संकाय

हिन्दी एवं भारतीय भाषा वभाग

एम.ए (हिन्दी), सेमेस्टर-3

पाठ्यक्रम शीर्षक - नाटक और रंगमंच : हिन्दी नाटक,नाट्य रूपांतर

पाठ्यक्रम कूट संकेत - एच.आई.एल 417 (HIL 417) श्रेय तुल्यमान: 4 श्रेय

पाठ्यक्रम वषयवस्तु -

इकाई-1 नाट्य परम्परा : परिचय एवं क्र मक वकास (8 घंटे)

छ) नाटक : परिभाषा एवं प्रमुख तत्व, नाटक और रंगमच
ज) संस्कृत नाटकों की परम्परा
झ) हिन्दी नाटकों की परम्परा का वकास
ञ) लोक नाट्य परम्परा का वकास
ट) व्यावसायिक नाटक मंड लयाँ

इकाई-2 भारतेंदु युगीन नाट्य परम्परा (8 घंटे)

घ) भारतेंदुयुगीन सामाजिक परिस्थितियाँ
ङ) भारतेंदु के प्रमुख प्रहसन
च) अन्धेर नगरी की भाषा एवं नाट्य- शल्प का अध्ययन
छ) समकालीन दौर में 'अन्धेर नगरी' का महत्व
ज) अन्धेर नगरी : समीक्षा एवं पाठ ववेचन

इकाई-3 प्रसाद युगीन नाट्य परम्परा (8 घंटे)

क) प्रसाद के नाटक और अ भनेयता
ख) जयशंकर प्रसाद की नाट्य-चेतना
ग) प्रसाद के समसामयिक नाट्यकार
घ) 'स्कन्दगुप्त' की ऐतिहा सकता, संवाद-शैली, गीत-योजना
ङ) 'स्कन्दगुप्त': समीक्षा एवं पाठ ववेचन

इकाई-4 प्रसादोत्तर नाट्य परम्परा (8 घंटे)

क) हिन्दी नाट्य-परम्परा में मोहन राकेश का योगदान
ख) 'लहरों के राजहंस' : ऐतिहा सकता और आधुनिकता का द्वन्द्व, समीक्षा एवं पाठ ववेचन
ग) हानूश : व्यक्ति और सत्ता का द्वंद्व,हानूश : समीक्षा एवं पाठ ववेचन
घ) जगदीश चन्द्र माथुर की नाट्य चेतना, कोणार्क में रोमानियत एवं प्रगतिशीलता का द्वंद्व
ङ) कोणार्क : समीक्षा एवं पाठ- ववेचन

इकाई-5 समकालीन हिन्दी नाटक : परिप्रेक्ष्य एवं संभावनाएं (8 घंटे)

- क) समकालीन हिन्दी नाटक : प्रमुख चुनौतियाँ एवं संभावनाएँ
- ख) पश्चिमी नाटकों का प्रदर्शन
- ग) नुक्कड़ नाटक का स्वरूप
- घ) रंगमंच: द लत पात्र, स्त्री छ वयाँ
- ङ) बाल रंगमंच : स्थिति और संभावनाएं

सम्भा वत ग्रन्थ :

आधार ग्रन्थ :

1. ओम प्रकाश संह (सम्पादन) भारतेन्दु हरिश्चन्द्र ग्रंथावली भाग-1,प्रकाशन संस्थान,दरिया गंज नई दिल्ली- 110002
2. जयशंकर प्रसाद प्रसाद के सम्पूर्ण नाटक एवं एकांकी,नार्थ इण्डिया पब्लिशर्स, सोनिया वहार,दिल्ली- 110094
3. भीष्म साहनी हानूश,राजकमल प्रकाशन,नई दिल्ली- 110002
4. मोहन राकेश लहरों के राजहंस, राजकमल प्रकाशन,नई दिल्ली-110002
5. जगदीश चन्द्र माथुर कोणार्क, राधाकृष्ण प्रकाशन,नई दिल्ली- 110002

संदर्भ ग्रन्थ :

6. डॉ. धीरेन्द्र शुक्ल (सम्पादन) हिन्दी नाट्य परिदृश्य,प्रकाशन संस्थान,नई दिल्ली- 110002
7. बच्चन संह हिन्दी नाटक, राधाकृष्ण प्रकाशन,दिल्ली,आवृत्ति :2011
8. गरीश रस्तोगी भारतेन्दु और अँधेर नगरी,अ भव्यक्ति प्रकाशन, वश्व वद्यालय मार्ग,इलाहाबाद- 211004
9. रेवती रमण प्रसाद और स्कन्द्गुप्त , अ भव्यक्ति प्रकाशन, वश्व वद्यालय मार्ग,इलाहाबाद- 211004
10. गरीश रस्तोगी हिन्दी नाटक और रंगमच : नयी दिशाएँ, नये प्रश्न, अ भव्यक्ति प्रकाशन , वश्व वद्यालय मार्ग,इलाहाबाद- 211004
11. कृष्णानंद तिवारी नाटककार मोहन राकेश, प्रय साहित्य सदन,दिल्ली- 110094
12. ने मचंद्र जैन रंग दर्शन,राधा कृष्ण प्रकाशन,दिल्ली,तीसरी आवृत्ति : 2010

हिमाचल प्रदेश केन्द्रीय वश्व वद्यालय

Central University of Himachal Pradesh

मान वकी और भाषा संकाय

हिन्दी एवं भारतीय भाषा वभाग

एम.ए. [हिन्दी] सेमेस्टर- **1**

पाठ्यक्रम कूट-संकेत : एच.आई.एल. **440 [HIL440]**

पाठ्यक्रम शीर्षक :हिन्दी साहित्य का इतिहास: आरंभ से रीतिकाल तक

क्रे डट : 04[एक क्रे डट व्याख्यान, संगठित कक्षा गति व ध और व्यक्तिगत सम्पर्क के 10 घंटे के बराबर, प्रयोगशाला /व्यावहारिक कार्य /ट्युटोरियल / शक्षक नियंत्रित गति व धयाँ के 5 घंटे और अन्य कार्य जैसे स्वतन्त्र व्यक्तिपरक कार्य, सामूहिक कार्य, निर्धारित अनिवार्य /वैकल्पिक कार्य, साहित्य समीक्षा, पुस्तकालय कार्य, तथ्य संग्रह, शोध-पत्र लेखन, सेमीनार, प्रबंध-लेखन इत्यादि के 15 घंटे के समान हैं]

पाठ्यक्रमउद्देश्य : पाठ्यक्रम का लक्ष्य छात्रों को साहित्य इतिहास के जीवन्त तथा शाश्वत तत्त्वों के संग्रहण की क्षमता से पूर्ण करना है; साथ ही छात्रों को हिन्दी साहित्य की बहु वस्तृत वरासत से परि चत कराते हुए एक वशेष साहित्यिक परंपरा के गहन अध्ययन और वश्लेषण का अवसर देना है |

उपस्थितिअनिवार्यता : पूर्ण एवं सुनिश्चित लाभ हेतु छात्र का सभी कक्षाओं में उपस्थित होना अनिवार्य है |न्यूनतम 75% कक्षाओं में उपस्थिति दर्ज न होने पर छात्र को परीक्षा में बैठने से वं चत कया जासकता है |

मूल्यांकन मापदंड : क.] मध्याव ध-सत्र परीक्षा - 25%

ख.] सत्रांत परीक्षा - 50%

ग.] सतत आतंरिक मूल्यांकन - 25%

* पुस्तकालय कार्य - 5%
* गृह कार्य - 5%
* कक्षा परीक्षा – 10%
* कक्षा प्रस्तुतियां - 5%

हिन्दी एवं भारतीय भाषा वभाग

एम.ए. [हिन्दी], सेमेस्टर- **1**

पाठ्यक्रम कोड **- HIL 440** क्रे डट - 4

पाठ्यक्रम शीर्षक -हिन्दी साहित्य का इतिहास:आरंभ से रीतिकाल तक

<u>पाठ्यक्रम ववरण -</u>

इकाई -1 साहित्येतिहास लेखन तथा काल वभाजन

- साहित्येतिहास का महत्त्व
- हिन्दी साहित्य के इतिहास लेखन की परम्परा
- हिन्दी साहित्य का इतिहासः काल वभाजन और नामकरण

इकाई – 2 आदिकाल

- हिन्दी साहित्य का आरम्भ, आदिकाल की पृष्ठभू म
- सद्ध साहित्य, नाथ साहित्य, जैन साहित्य
- रासो साहित्य, लौ कक साहित्य

इकाई -3 भक्तिकाल-एक

- भक्ति आन्दोलन के उदय की सामाजिक-सांस्कृतिक पृष्ठभू म
- संत काव्यधरा, प्रमुख प्रवृत्तियां एवं महत्वपूर्ण क व
- सूफ़ीकाव्यधारा, प्रमुख प्रवृत्तियां एवं महत्वपूर्ण क व

इकाई -4भक्तिकाल -दो

- रामभक्ति काव्यधारा, प्रमुख प्रवृत्तियां एवं महत्वपूर्ण क व
- कृष्ण भक्ति काव्यधारा, प्रमुख प्रवृत्तियां एवं महत्वपूर्ण क व
- भक्ति काल की उपलब्धियां एवं पतन के कारण

इकाई – 5 रीतिकाल

- रीति काल की सामाजिक-सांस्कृतिक पृष्ठभू म,दरबारी संस्कृति और रीतिकाव्य
- रीतिबद्धतथा रीति सद्ध काव्यधाराएं प्रमुख प्रवृत्तियां एवं महत्वपूर्ण क व
- रीतिमुक्त काव्यधाराएं प्रमुख प्रवृत्तियां एवं महत्वपूर्ण क व

सन्दर्भ ग्रन्थ :

1. *हिन्दी साहित्य का इतिहास : रामचंद्र शुक्ल*
2. *हिन्दी साहित्य का इतिहास : सं. डॉ.नगेन्द्र*
3. *हिन्दी साहित्य का आदिकाल : हजारी प्रसाद द् ववेदी*
4. *हिन्दी साहित्यः उद्भव और वकास : हजारी प्रसाद द् ववेदी*
5. *हिन्दी साहित्य की भू मका : हजारी प्रसाद द् ववेदी*
6. *साहित्य और इतिहास दृष्टि : मैनेजर पाण्डेय*
7. *महावीर प्रसाद द् ववेदी और हिन्दी नवजागरण : राम वलास शर्मा*
8. *हिन्दी साहित्य का अतीत : वश्वनाथ प्रसाद मश्र*
9. *हिन्दी साहित्य का दूसरा इतिहास ; बच्चन संह*

हिमाचल प्रदेश केन्द्रीय वश्व वद्यालय
Central University of Himachal Pradesh
PO BOX: 21, DHARAMSHALA, DISTRICT KANGRA – 176215
मान वकी और भाषा संकाय
हिन्दी एवं भारतीय भाषा वभाग

एम.ए (हिन्दी) सेमेस्टर-3

पाठ्यक्रम कूट-संकेत : एच.आई.एल. 442[**HIL442**]

पाठ्यक्रम शीर्षक : पाश्चात्य साहित्य सद्धांत

क्रे डट : 4 [एक क्रे डट व्याख्यान, संगठित कक्षा गति व ध और व्यक्तिगत सम्पर्क के 10 घंटे के बराबर, प्रयोगशाला /व्यावहारिक कार्य /ट्युटोरियल / शक्षक नियंत्रित गति व धयाँ के 5 घंटे और अन्य कार्य जैसे स्वतन्त्र व्यक्तिपरक कार्य, सामूहिक कार्य, निर्धारित अनिवार्य /वैकल्पिक कार्य, साहित्य समीक्षा, पुस्तकालय कार्य, तथ्य संग्रह, शोध-पत्र लेखन, सेमीनार, प्रबंध लेखन इत्यादि के 15 घंटे के सामान हैं]

पाठ्यक्रमउद्देश्य : पाठ्यक्रमकाउद्देश्य पाश्चात्य साहित्य- सद्धांत की व्यापक परंपरा से छात्रों को परि चत कराना है, ता क वे इन साहित्य सद्धांतों से न केवल परि चत हों बल्कि उसके संग्रहणीय तत्त्वों से लाभान्वित हों तथा वर्तमान में साहित्य के मूल्यांकन की ववेकपूर्ण आलोचकीय दृष्टि उनमें वक सत हो सके |

उपस्थितिअनिवार्यता : पूर्ण एवं सुनिश्चित लाभ हेतु छात्र का सभी कक्षाओं में उपस्थित होना अनिवार्य है |न्यूनतम 75% कक्षाओं में उपस्थिति दर्ज न होने पर छात्र को परीक्षा में बैठने से वं चत कया जासकता है |

मूल्यांकन मापदंड : क.] मध्याव ध-सत्र परीक्षा - 25%

ख.] सत्रांत परीक्षा - 50%

ग.] सतत आतंरिक मूल्यांकन - 25%

* पुस्तकालय कार्य - 5%
* गृह कार्य - 5%
* कक्षा परीक्षा - **10%**
* कक्षा प्रस्तुतियां - 5%

हिन्दी एवं भारतीय भाषा वभाग

सेमेस्टर- 3, एम.ए.(हिन्दी)

कोर्स कोड –**HIL** 442 क्रे डट–4

पाठ्यक्रम शीर्षक : पाश्चात्य साहित्य सद्धांत

<u>पाठ्यक्रम वविरण -</u>

इकाई -**1**पाश्चात्य साहित्य सद्धांतः एक परिचय

- पश्चिम में साहित्य की अवधारणा और स्वरूप
- पाश्चात्य साहित्य चंतन परम्परा का ऐतिहा सक वकास

इकई -2 पाश्चात्य साहित्य सद्धांत **-1**

- प्लेटो -प्रत्यय सद्धांत,अनुकृति, काव्य पर आरोप
- अरस्तु -अनुकृति, वरेचन सद्धांत
- लोंजाइनस- काव्य में उदात्त की अवधारणा

इकाई-3 पाश्चात्यसाहित्य सद्धांत **-2**

- वर्ड्सवर्थ- काव्य भाषा सद्धांत
- कोलरिज- कल्पना सद्धांत
- क्रोचे- अ भव्यंजनावाद

इकाई- **4** पाश्चात्यसाहित्य सद्धांत **-3**

- टी.एस.ए लयट- परंपरा और वैयक्तिक प्रतिभा, निर्वैयक्तिकता
- आई.ए.रिचर्ड्स - मूल्य सद्धांत, सम्प्रेषण सद्धांत

इकाई- 5 पाश्चात्य साहित्य सद्धांत **-4**

- शास्त्रीयतावाद, स्वच्छन्दतावाद, मार्क्सवाद,
- नई समीक्षा, संरचनावाद, उत्तर संरचनावाद, वखंडनवाद,
- साहित्यिक शैली वज्ञान,उत्तर आधुनिकताइत्यादि

सन्दर्भ ग्रन्थ :

10. पाश्चात्य काव्यशास्त्र : देवेन्द्र नाथ शर्मा
11. पाश्चात्यसाहित्य चंतन : निर्मला जैन
12. संरचनावाद,उत्तर संरचनावाद और प्राच्य काव्य शास्त्र : गोपी चंद नारंग
13. पाश्चात्य काव्यशास्त्र का इतिहास : डॉ. तारखनाथ बाली
14. भारतीय एवं पाश्चात्य काव्यशास्त्र की रूपरेखा : डॉ.रामचंद्र तिवारी
15. भारतीय एवं पाश्चात्य काव्य सद्धांत : डॉ.गणपति चन्द्र गुप्त
16. पाश्चात्य काव्यशास्त्र- इतिहास, सद्धांत और वाद : डॉ,भागीरथ मश्र
17. पाश्चात्य काव्यशास्त्र- अधुनातन सन्दर्भ : सत्यदेव मश्र

हिमाचल प्रदेश केंद्रीय वश्व वद्यालय

मान वकी एवं भाषा संकाय

हिन्दी एवं भारतीय भाषा वभाग

एम.ए (हिन्दी), सेमेस्टर-3

पाठ्यक्रम शीर्षक -   रीतिकाव्य

पाठ्यक्रम कूट संकेत - एच.आई.एल 447 **(HIL 447)**   श्रेय तुल्यमान: **2** श्रेय (1 श्रेय

व्याख्यान,संगठित कक्षा गति व ध और व्यक्तिगत संपर्क के 10 घंटे; प्रयोगशाला या / व्यावहारिक कार्य,ट्यूटोरियल, शक्षक नियंत्रित गति व धयों /कार्य के 5 घंटे;और अन्य कार्य जैसे स्वतन्त्र व्यक्तिपरक कार्य ,सामूहिक कार्य,निर्धारित अनिवार्य /वैकल्पिक कार्य,साहित्य समीक्षा,पुस्तकालय कार्य,तथ्य संग्रह,शोधपत्र लेखन,से मनार,प्रबंध लेखन,इत्यादि के 15 घंटे के समान है |

पाठ्यक्रम का उद्देश्य: रीतिकालीन काव्य-परम्परा के वषय में एम. ए के वद्या थयों को समु चत जानकारी देना है,जिससे क वे रीतिकालीन सन्दर्भो और तद्युगीन साहियिक परिस्थितियों की सही समझ ग्रहण कर सकें | आमतौर पर रीतिकाल को सामन्तवादी काल कहकर खारिज करने की मंशा साहित्यिक हलकों में देखी जाती है,या फर भोगवादी काल कहकर समकालीन आलोचना- वमर्श से बाहर रखने की कवायद देखी जाती है । पाठ्यक्रम का उद्देश्य रीतिकालीन साहित्य की ववेचना करते हुए समकालीन समय में उसे सही तौर पर व्याख्यायित करना है,जिससे क वद्यार्थी उसे हृदयंगम कर सकें और अपनी साहित्यिक दृष्टि का वकास कर सकें ।

उपस्थिति अनिवार्यता: पूर्ण एवं सुनिश्चित लाभ हेतु वद्यार्थी का सभी कक्षाओं में भागीदार होना अनिवार्य है | न्यूनतम 75% कक्षाओं में उपस्थिति दर्जा ना होने पर वद्यार्थी को परीक्षा में बैठने से वं चत कया जा सकता है |

मूल्यांकन मापदंड :   क) मध्याव ध परीक्षा - 25%

ख) सत्रांत परीक्षा - 50%

ग) सतत आतंरिक मूल्यांकन - 25%

*पुस्तकालय कार्य -   5%

*प्रायो गक कार्य -   5%

*गृह-कार्य -   5%

* कक्षा परीक्षा -   5%

*कक्षा-प्रस्तुतियां   5%

हिमाचल प्रदेश केंद्रीय वश्व वद्यालय

मान वकी एवं भाषा संकाय

हिन्दी एवं भारतीय भाषा वभाग

एम.ए (हिन्दी), सेमेस्टर-3

पाठ्यक्रम शीर्षक - रीतिकाव्य

पाठ्यक्रम कूट संकेत - एच.आई.एल 447 **(HIL 447)** श्रेय तुल्यमान: **2** श्रेय

पाठ्यक्रम वषयवस्तु -

इकाई-1 रीतिकालीन हिन्दी काव्य : नामकरण एवं स्थितियाँ (4 घंटे)

ठ) रीति का अर्थ एवं स्वरूप,रीति सम्प्रदाय

ड) रीतिकालीन हिंदी काव्य की प्रमुख प्रवृत्तियाँ

ढ) हिंदी रीति काव्य के नामकरण का आधार

ण) रीतिकालीन परिस्थितियाँ : सामाजिक,राजनीतिक,सांस्कृतिक

इकाई-2 रीति-पूर्व हिन्दी रीति काव्य (4 घंटे)

झ) भक्तिकालीन प्रमुख रीति क व

ञ) रहीम का रचना संसार एवं युगीन सन्दर्भ

इकाई-3 रीति काव्य-परम्परा : **1** (4 घंटे)

च) रीतिबद्ध क वता : प्रमुख क व एवं रचनाएँ

छ) भूषण का काव्य : राष्ट्रीयता, काव्यानुभूति,काव्य भाषा

ज) पाठ ववेचन :(‘ शवा बावनी’, सन्दर्भ - भूषण-ग्रन्थावली)

इकाई-4 रीति काव्य-परम्परा : **2** (4 घंटे)

च) रीति सद्ध क वता : प्रमुख क व एवं रचनाएँ

छ) बिहारी का रचना-संसार,बिहारी की समाहार शक्ति

ज) पाठ ववेचन : (सन्दर्भ - बिहारी-रत्नाकर,दोहा संख्या- 1,13,18,20,21,25,32,34,35 38,52,57, 60,73,75,80,121,140,141,154,159,167,191,200)

इकाई-5 रीति काव्य-परम्परा: **3** (4 घंटे)

च) रीतिमुक्त क वता : प्रमुख क व एवं रचनाएँ

छ) घनानन्द का रचना-संसार, घनानंद की वरहानुभूति

ज) पाठ ववेचन (सन्दर्भ - घनानन्द-क वत्त, क वत्त संख्या 1,2,3,4,5,6,7,8,9,10,11,12,)

सम्भा वत ग्रन्थ :

आधार ग्रन्थ :

13. डॉ. सत्य प्रकाश मश्र (सम्पादन) रहीम रचनावली', लोकभारती प्रकाशन,इलाहाबाद,द् वतीय संस्करण :2002

14. डॉ. वजयपाल संह 'भूषण-ग्रन्थावली',जय भारती प्रकाशन,इलाहाबाद. संस्करण 2007

15. सुधाकर पाण्डेय (संपादन) 'रसलीन-ग्रन्थावली',नागरीप्रचारिणी सभा,काशी

16. जगन्नाथ दास रत्नाकर (संपादन) बिहारी-रत्नाकर

17. भगीरथ मश्र हिन्दी रीति साहित्य (घनानन्द) ,राजकमल प्रकाशन,नई दिल्ली-110002

संदर्भ ग्रन्थ :

18. आचार्य रामचन्द्र शुक्ल हिन्दी साहित्य का इतिहास , प्रकाशन संस्थान, अंसारी रोड,दरियागंज,

नई दिल्ली - 110 002

19. डॉ. बच्चन संह हिन्दी साहित्य का दूसरा इतिहास,राधाकृष्ण प्रकाशन, अंसारी रोड,दरियागंज,

नई दिल्ली - 110 002

20. डॉ. नगेन्द्र रीतिकाव्य की भू मका,नेशनल पब्लि शंग हाउस, अंसारी रोड,दरियागंज,

नई दिल्ली - 110 002

21. भवदेव पाण्डेय आलम, साहित्य अकादेमी,रवीन्द्र भवन,फ़ीरोज़शाह मार्ग,नई दिल्ली-110 002

22. सत्यदेव त्रिपाठी मध्यकालीन क वता के सामाजिक सरोकार, शल्पायन,शाहदरा,दिल्ली-110032

हिमाचल प्रदेश केंद्रीय वश्व वद्यालय

मान वकी एवं भाषा संकाय

हिन्दी एवं भारतीय भाषा वभाग

एम.ए (हिन्दी), सेमेस्टर-3

पाठ्यक्रम शीर्षक - वमर्श वश्लेषण

पाठ्यक्रम कूट संकेत - एच.आई.एल 503 (HIL 503) श्रेय तुल्यमान: 4 श्रेय (1 श्रेय व्याख्यान,संगठित कक्षा गति व ध और व्यक्तिगत संपर्क के 10 घंटे; प्रयोगशाला या /व्यावहारिक कार्य,ट्यूटोरियल, शक्षक नियंत्रित गति व धयों /कार्य के 5 घंटे;और अन्य कार्य जैसे स्वतन्त्र व्यक्तिपरक कार्य ,सामूहिक कार्य,निर्धारित अनिवार्य /वैकल्पिक कार्य,साहित्य समीक्षा,पुस्तकालय कार्य,तथ्य संग्रह,शोधपत्र लेखन,से मनार,प्रबंध लेखन,इत्यादि के 15 घंटे के समान है |

पाठ्यक्रम का उद्देश्य: एम.ए स्तर के वद्या र्थयों को समकालीन वमर्श की जानकारी देना है ता क वे अस्मिता के लए संघर्षरत तबकों की वस्तुस्थिति जान सकें | साथ ही समाज को बदलने में अपनी सार्थक भू मका का निर्वाह कर सकें |

उपस्थिति अनिवार्यता: पूर्ण एवं सुनिश्चित लाभ हेतु वद्यार्थी का सभी कक्षाओं में भागीदार होना अनिवार्य है | न्यूनतम 75% कक्षाओं में उपस्थिति दर्जा ना होने पर वद्यार्थी को परीक्षा में बैठने से वं चत कया जा सकता है |

मूल्यांकन मापदंड : क) मध्याव ध परीक्षा - 25%

ख) सत्रांत परीक्षा - 50%

ग) सतत आतंरिक मूल्यांकन - 25%

*पुस्तकालय कार्य - 5%

*प्रायो गक कार्य - 5%

*गृह-कार्य - 5%

* कक्षा परीक्षा - 5%

*कक्षा-प्रस्तुतियां 5%

हिमाचल प्रदेश केंद्रीय वश्व वद्यालय

मान वकी एवं भाषा संकाय

हिन्दी एवं भारतीय भाषा वभाग

एम.ए (हिन्दी), सेमेस्टर-3

पाठ्यक्रम शीर्षक - वमर्श वश्लेषण

पाठ्यक्रम कूट संकेत - एच.आई.एल 503 (HIL 503) श्रेय तुल्यमान: 4 श्रेय

पाठ्यक्रम वषयवस्तु -

इकाई-1 वमर्श की अवधारणा (8 घंटे)

त) वमर्श का अर्थ एवं स्वरूप

थ) वमर्श को लेकर व भन्न वद्वानों के मत

द) साहित्य में वमर्श

ध) समकालीन सन्दर्भ में वमर्श की प्रासं गकता

इकाई-2 द लत वमर्श (8 घंटे)

ट) द लत वमर्श : अर्थ एवं स्वरूप

ठ) क वता में द लत वमर्श

ड) कथा साहित्य में द लत वमर्श

ढ) नाटक में द लत वमर्श

ण) आत्मकथा में द लत वमर्श

त) वशेष साहित्यकार का अध्ययन - तुलसी राम (आत्मकथा- मुर्दहिया), ओमप्रकाश वाल्मी क (कहानी संग्रह - सलाम)

इकाई-3 स्त्री वमर्श (8 घंटे)

झ) स्त्री वमर्श की अवधारणा

ञ) हिन्दी क वता में स्त्री की उपस्थिति

ट) कथा साहित्य में महिला लेखन

ठ) आत्मकथाओं में स्त्री अस्मिता की पड़ताल

ड) नारी जागरण और शक्षा

ढ) वशेष साहित्यकार का अध्ययन - मैत्रेयी पुष्पा (अल्मा कबूतरी)

इकाई-4 आदिवासी वमर्श (8 घंटे)

झ) आदिवासी वमर्श की अवधारणा

ञ) आदिवासी लोक एवं संस्कृति

ट) हिन्दी कथा साहित्य में आदिवासी वमर्श

ठ) समकालीन हिन्दी क वता में आदिवासी वमर्श

ड) भारतीय भाषाओं में आदिवासी वमर्श

ढ) आदिवासी समाज की समस्याएं और चुनौतियाँ

ण)   वशेष साहित्यकार का अध्ययन : महादेव टोप्पो (क वता संग्रह - जंगल पहाड़ के पाठ)
राजीव रंजन प्रसाद (उपन्यास - आमचो बस्तर), रणेंद्र (उपन्यास- ग्लोबल गाँव के देवता)

इकाई-5 कन्नर वमर्श (थर्ड जेंडर)   (8 घंटे)

झ) कन्नर वमर्श की अवधारणा
ञ) कथा साहित्य में कन्नर वमर्श
ट) हिन्दी सनेमा में कन्नर वमर्श
ठ) आत्मकथा में कन्नर वमर्श
ड) समकालीन सन्दर्भ में कन्नर समाज की समस्याएं एवं चुनौतियाँ
ढ) वशेष साहित्यकार का अध्ययन : महेंद्र भीष्म (उपन्यास - कन्नर कथा), वजेंद्र प्रताप संह (संपादित कहानियाँ) कथा और कन्नर

सम्भा वत ग्रन्थ :

आधार ग्रन्थ :

तुलसी राम	मुर्दहिया	
ओमप्रकाश वाल्मी क	सलाम	
मैत्रेयी पुष्पा	अल्मा कबूतरी,	राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली, संस्करण- 2000
महादेव टोप्पो	जंगल पहाड़ के पाठ, अनुज्ञा बुक्स, दिल्ली	
राजीव रंजन प्रसाद	आमचो बस्तर	
रणेंद्र	ग्लोबल गाँव के देवता	
महेंद्र भीष्म	कन्नर कथा, सामयिक प्रकाशन,दिल्ली	
वजेंद्र प्रताप संह	(संपादित कहानियाँ) कथा और कन्नर	

संदर्भ ग्रन्थ :

23. डॉ. अर्जुन चव्हाण वमर्श के व वध आयाम,वाणी प्रकाशन,नई दिल्ली
24. प्रो. श्रीराम शर्मा (संपादन) समकालीन हिन्दी साहित्य व वध वमर्श,वाणी प्रकाशन,नई दिल्ली
25. कँवल भारती द लत क वता का संघर्ष,अमन प्रकाशन,कानपुर नगर - 208012 उ.प्र.
26. डॉ. संजय नवले हिन्दी द लत आत्मकथा, अमन प्रकाशन,कानपुर नगर - 208012 उ.प्र.
27. सुमन राजे इतिहास में स्त्री, भारतीय ज्ञानपीठ,18,इन्स्टीट्यूशनल एरिया,लोदी रोड,नई दिल्ली-110032
28. क्षमा शर्मा स्त्रीत्ववादी वमर्श, राजकमल प्रकाशन,नई दिल्ली -110032
29. जगदीश्वर चतुर्वेदी स्त्री साहित्य वमर्श, अना मका पब्लिशर्स एण्ड डस्ट्रीब्यूटर्स,दिल्ली
30. वजेंद्र प्रताप संह (सम्पादन) वं चत संवेदना का साहित्य खंड-3 आकांक्षा पब्लि शंग हाउस,नई दिल्ली
31. योगेश अटल आदिवासी भारत,रावत पब्लिकेशन्स,नई दिल्ली
32. रम णका गुप्ता (सम्पादन) आदिवासी लोक, शल्पायन प्रकाशन,दिल्ली 110032
33. डॉ. राम रतन प्रसाद आदिवासी लोकगीतों की संस्कृति, अनंग प्रकाशन,दिल्ली
34. वजेंद्र प्रताप संह (सम्पादन) वमर्श का तीसरा पक्ष (थर्ड जेंडर), अनंग प्रकाशन दिल्ली
35. वजेंद्र प्रताप संह (सम्पादन) हिन्दी साहित्य एवं समाज में तृतीय लंगीय वमर्श, अमन प्रकाशन, कानपुर
36. वजेंद्र प्रताप संह (सम्पादन) हिन्दी उपन्यासों के आईने में थर्ड जेंडर ,अमन प्रकाशन, कानपुर

37. वजेंद्र प्रताप संह (सम्पादित कहानियाँ) कथा और कन्नर, अमन प्रकाशन, कानपुर

<u>व्याख्यान योजना</u>-

पाठ्यक्रम कूट संकेत – एच.आई.एल 503 (**HIL 503**) क्रे डट- 4

पाठ्यक्रम शीर्षक – वमर्श वश्लेषण

व्याख्यान संख्या	व्याख्यान वषय	सम्भा वत स्रोत
1-4	इकाई एक प्रारम्भ, वमर्श की अवधारणा क) वमर्श का अर्थ एवं स्वरूप ख) वमर्श को लेकर व भन्न वद्वानों के मत	पाठ्यपुस्तक 1,2
5-8	ग)साहित्य में वमर्श घ) समकालीन सन्दर्भ में वमर्श की प्रासं गकता	पाठ्यपुस्तक 1,2
9-12	इकाई दो प्रारम्भ, द लत वमर्श क) द लत वमर्श : अर्थ एवं स्वरूप ख) क वता में द लत वमर्श ग) कथा साहित्य में द लत वमर्श	पाठ्यपुस्तक 3,4
13-16	घ) नाटक में द लत वमर्श ङ) आत्मकथा में द लत वमर्श च) वशेष साहित्यकार का अध्ययन - तुलसी राम (आत्मकथा- मुर्दहिया), ओमप्रकाश वाल्मी क (कहानी संग्रह -सलाम)	पाठ्यपुस्तक 3,4
17-20	इकाई तीन प्रारम्भ,स्त्री वमर्श क) स्त्री वमर्श की अवधारणा ख) हिन्दी क वता में स्त्री की उपस्थिति ग) कथा साहित्य में महिला लेखन	पाठ्यपुस्तक 5,6,7
21-24	घ) आत्मकथाओं में स्त्री अस्मिता की पड़ताल ङ) नारी जागरण और शक्षा च) वशेष साहित्यकार का अध्ययन - मैत्रेयी पुष्पा (उपन्यास - अल्मा कबूतरी)	पाठ्यपुस्तक 5,6,7
25-26	इकाई चार प्रारम्भ, आदिवासी वमर्श क) आदिवासी वमर्श की अवधारणा ख) आदिवासी लोक एवं संस्कृति ग) हिन्दी कथा साहित्य में आदिवासी वमर्श	पाठ्यपुस्तक 8,9,10,11
27-28	घ) समकालीन हिन्दी क वता में आदिवासी वमर्श ङ) भारतीय भाषाओं में आदिवासी वमर्श च) आदिवासी समाज की समस्याएं और चुनौतियाँ	पाठ्यपुस्तक 8,9,10,11
29-32	छ) वशेष साहित्यकार का अध्ययन : महादेव टोप्पो (क वता संग्रह - जंगल के पहाड़), राजीव रंजन प्रसाद (उपन्यास - आमचो बस्तर), रणेंद्र (उपन्यास - ग्लोबल गाँव के देवता)	पाठ्यपुस्तक 8,9,10,11
33-36	इकाई पाँच प्रारम्भ, कन्नर वमर्श (थर्ड जेंडर) क) कन्नर वमर्श की अवधारणा ख) कथा साहित्य में कन्नर वमर्श	पाठ्यपुस्तक 12,13,14,15
37-38	ग) हिन्दी सनेमा में कन्नर वमर्श घ) आत्मकथा में कन्नर वमर्श	पाठ्यपुस्तक 12,13,14,15
39-	ङ) समकालीन सन्दर्भ में कन्नर समाज की समस्याएं एवं चुनौतियाँ	पाठ्यपुस्तक

40	ण) वशेष साहित्यकार का अध्ययन : महेंद्र भीष्म (उपन्यास- कन्नर कथा), वजेंद्र प्रताप संह (संपादित कहानियाँ) (कथा और कन्नर)	12,13,14,15

हिमाचल प्रदेश केन्द्रीय वश्व वद्यालय

मान वकी एवं भाषा संकाय

हिन्दी एवं भारतीय भाषा वभाग

एम.ए. (हिंदी),तृतीय सेमेस्टर

पाठ्यक्रम कूट-संकेत:.एच.आई.एल. (HIL 422)

पाठ्यक्रम शीर्षक- लोक साहित्य श्रेय तुल्यमान: 4

पाठ्यक्रम का उद्देश्य: पाठ्यक्रम का लक्ष्य वद्या र्थयों को हिंदी लोक साहित्य से परि चत कराना है |लोक गीत के प्रारम्भ में मौजूद व भन्न चन्ताधाराओं के वषय में जानकारी प्रदान करना है , जिससे क लोक समझ के साथ ही हिंदी लोक गीत का ज्ञान वक सत कया जा सके |जिससे क लोक साहित्य के उद्गम, इतिहास और उसकी गौरवशाली परम्परा से एम.ए. तृतीय सेमेस्टर (हिन्दी) के वद्या र्थयों को परि चत कराया जा सके |

उपस्थिति अनिवार्यता: पूर्ण एवं सुनिश्चित लाभ हेतु वद्यार्थी का सभी कक्षाओं में भागीदार होना अनिवार्य है | न्यूनतम 75% कक्षाओं में उपस्थिति दर्ज ना होने पर वद्यार्थी को परीक्षा में बैठने से वं चत कया जा सकता है |

मूल्यांकन मापदंड :

क) मध्याव ध परीक्षा - 25%

ख) सत्रांत परीक्षा - 50%

ग) सतत आतंरिक मूल्यांकन - 25%

*पुस्तकालय कार्य - 5%

*प्रायो गक कार्य - 5%

*गृह-कार्य - 5%

* कक्षा परीक्षा - 5%

*कक्षा-प्रस्तुतियां 5%

हिमाचल प्रदेश केन्द्रीय वश्व वद्यालय

मान वकी एवं भाषा संकाय

हिन्दी एवं भारतीय भाषा वभाग

एम.ए. (हिंदी),तृतीय सेमेस्टर

पाठ्यक्रम कूट-संकेत:.एच.आई.एल. (HIL 422)

पाठ्यक्रम शीर्षक- लोक साहित्य श्रेय तुल्यमान: 4

पाठ्यक्रम वषयवस्तु –

इकाई-1 लोक साहित्य और उसका वकास **(8 घंटे)**

घ) लोक साहित्य : अ भप्राय एवं परिभाषा

ङ) लोक की संरचना

च) लोक साहित्य के व भन्न रूप

छ) लोक साहित्य : परम्परा और प्रयोग

ज) लोक साहित्य और हिंदी साहित्य का अन्तः संबंध

झ) हिंदी साहित्य के वकास में लोक साहित्य का योगदान

इकाई-2 आदिकालीन लोक साहित्य **(8 घंटे)**

क) आदिकालीन लोक साहित्य : एक परिचय

ख) आदिकालीन लोक गाथा

ग) आदिकाल में लोक साहित्य : प्रमुख क व

घ) आदिकाल में लोक साहित्य की वशेषताएं

ङ) पाठ ववेचन : अमीर ख़ुसरो के लोक गीत (काहे को ब्याहे बिदेस, बन बोलन लागे मोर, छाप तिलक सब छीनी, सावन आया, मोरे पया घर आए)

इकाई-3 लोक साहित्य : महत्त्व और वशेषताएँ **(8 घंटे)**

क) लोक साहित्य और लोक संस्कृति

ख) लोक साहित्य और सामाजिक चेतना

ग) लोक साहित्य और वमर्श

घ) लोक साहित्य का महत्त्व एवं वशेषताएँ

ङ) पाठ ववेचन : आद्या प्रसाद उन्मत्त (अवधी लोक गीत 'पाती')

इकाई-4 लोक साहित्य की व भन्न वधाएँ **(8 घंटे)**

क) लोक गीत और ग्राम गीत

ख) लोक गीत : एक परिचय

ग) लोक गीतों में मातृभू म प्रेम

घ) लोक से सम्बं धत ऋतु गीत

ङ) लोक से सम्बं धत संस्कार गीत

च) लोक से सम्बं धत देवी-देवताओं के गीत

छ) लोक से सम्बं धत जाति-गीत

ज) लोक से सम्बं धत श्रम-गीत

इकाई-5 लोक नाट्य और लोक सुभा षत **(8 घंटे)**

क) लोक नाट्य : एक परिचय

ख) नौटंकी : एक परिचय

ग) नकटा : एक परिचय

घ) लोक सुभा षत : एक परिचय

ङ) लोक से सम्बं धत लोकोक्ति

च) लोक से सम्बं धत मुहावरा

संभा वत ग्रन्थ –

सन्दर्भ ग्रन्थ :

1. लोक साहित्य की भू मका : कृष्णदेव उपाध्याय, साहित्य भवन, इलाहाबाद
2. भारत में लोक साहित्य : कृष्णदेव उपाध्याय, साहित्य भवन, इलाहाबाद
3. भारत की लोक कथाएँ : सं. ए. के. रामानुजन, नॅशनल बुक ट्रस्ट, नई दिल्ली
4. खड़ी बोली का लोक साहित्य : डॉ. सव्यरानी, हिन्दुस्तानी एकेडमी, इलाहाबाद
5. लोक साहित्य वज्ञान : डॉ. सत्येन्द्र, अपोलो प्रकाशन, जयपुर
6. लोक धारा : हीराम ण संह 'साथी', अनंग प्रकाशन, दिल्ली
7. जनपदीय भाषा साहित्य(अवधी काव्य): डॉ.सूर्य प्रसाद दी क्षत (सं.),प्रकाशन केन्द्र, लखनऊ
8. भारतीय लोक-साहित्य - श्याम परमार, राजकमल प्रकाशन, दिल्ली
9. लोक साहित्य और संस्कृति - डॉ. दिनेश्वर प्रसाद, लोक भारती प्रकाशन, इलाहाबाद
10. लोक साहित्य : एक निरूपण - रामचंद्र बोड़ा, एजूकेशनल प्रेस, बीकानेर
11. लोक साहित्य के प्रतिमान - डॉ. कुंदनलाल उप्रेती, भारत प्रकाशन मंदिर, अलीगढ़
12. आदिवासी लोकगीतों की संस्कृति - डॉ. राम रतन प्रसाद, अनंग प्रकाशन,दिल्ली
13. लोक काव्य के क्षतिज - डॉ. हरि संह पाल, अनंग प्रकाशन, दिल्ली
14. अमीर खुसरो और उनका साहित्य - डॉ. भोलानाथ तिवारी, प्रभात प्रकाशन, दिल्ली
15. लोक साहित्य वमर्श - डॉ. स्वर्णलता, रत्न स्मृति प्रकाशन, बीकानेर

16. लोकगीत की सत्ता - डॉ. सुरेश गौतम, शब्द सेतु प्रकाशक, दिल्ली
17. लोक साहित्य की भू मका - डॉ. रवीन्द्र भ्रमर, साहित्य सदन, कानपुर
18. लोक साहित्य का सामाजिक सांस्कृतिक अध्ययन –श्रीरामशर्मा, निर्मलपब्लिकेशन, दिल्ली
19. लोक साहित्य की सांस्कृतिक परम्परा - डॉ. मनोहरशर्मा, रोशनलालजैन एंड संस, जयपुर
20. लोक साहित्य की रूपरेखा - डॉ. कृष्णचन्द्र शर्मा (सं.), अ मत प्रकाशन, गाजियाबाद

<u>व्याख्यान योजना</u>-

पाठ्यक्रम कूट संकेत – एच.आई.एल 442 (**HIL** 442) क्रे डट- 4

पाठ्यक्रम शीर्षक – लोक साहित्य

व्याख्यान संख्या	व्याख्यान वषय	सम्भा वत स्रोत
1-4	इकाई-**1** लोक साहित्य और उसका वकास क) लोक साहित्य : अ भप्राय एवं परिभाषा ख) लोक की संरचना ग) लोक साहित्य के व भन्न रूप घ) लोक साहित्य : परम्परा और प्रयोग	पाठ्यपुस्तक 1,2,3,4,5,8,9,10,11
5-6	च) लोक साहित्य और हिंदी साहित्य का अन्तः संबंध छ)हिंदी साहित्य के वकास में लोक साहित्य का योगदान	पाठ्यपुस्तक 6,13
7-9	इकाई-**2** आदिकालीन लोक साहित्य क)आदिकालीन लोक साहित्य : एक परिचय ख) आदिकालीन लोक गाथा ग) आदिकाल में लोक साहित्य : प्रमुख क व	पाठ्यपुस्तक 6,13
10-11	घ) आदिकाल में लोक साहित्य की वशेषताएं ड़) पाठ ववेचन : अमीर ख़ुसरो के लोक गीत (काहे को ब्याहे बिदेस, बन बोलन लागे मोर, छाप तिलक सब छीनी, सावन आया, मोरे पया घर आए) पाठ ववेचन : अमीर ख़ुसरो के लोक गीत (काहे को ब्याहे बिदेस,	पाठ्यपुस्तक 13,14

	बन बोलन लागे मोर, छाप तिलक सब छीनी, सावन आया, मोरे पया घर आए)	
12-14	इकाई-3 लोक साहित्य : महत्त्व और वशेषताएँ क) लोक साहित्य और लोक संस्कृति ख) लोक साहित्य और सामाजिक चेतना ग) लोक साहित्य और वमर्श	पाठ्यपुस्तक 9,10,11,12,13,15,14,17
15-16	घ) लोक साहित्य का महत्त्व एवं वशेषताएँ ड़) पाठ ववेचन : आद्या प्रसाद उन्मत्त(अवधी लोक गीत 'पाती')	पाठ्यपुस्तक 15,18,19,20,7
17-20	इकाई-4 लोक साहित्य की व भन्न वधाएँ क) लोक गीत और ग्राम गीत ख) लोक गीत : एक परिचय ग) लोक गीतों में मातृभू म प्रेम घ) लोक से सम्बं धत ऋतु गीत	पाठ्यपुस्तक 13,16,19,6,4,2
21-24	ड़) लोक से सम्बं धत संस्कार गीत च) लोक से सम्बं धत देवी-देवताओं के गीत छ) लोक से सम्बं धत जाति-गीत ज) लोक से सम्बं धत श्रम-गीत	पाठ्यपुस्तक 13,16,19,6,4,2,1
25-27	इकाई-5 लोक नाट्य और लोक सुभा षत क) लोक नाट्य : एक परिचय ख) नौटंकी : एक परिचय ग) नकटा : एक परिचय	पाठ्यपुस्तक 13,16,19,6,4,2,1, 2,3,4,5,6,7
28-30	घ) लोक सुभा षत : एक परिचय ड़) लोक से सम्बं धत लोकोक्ति च) लोक से सम्बं धत मुहावरा	पाठ्यपुस्तक 13,16,19,6,4,2,1, 2,3,4,5,6,